

गंगाकचरावैः वा वंदावतावासस्व
वादिकचावैः स्वर्गात्पुपातालमे
दावनसोमौतः नवरात्रिराजतके
हीतहाचलतामाधुरीपोनयेकरैत
नस्यामकविजमुनापरज्याये वैधर
पेयारीध्यातनाथननकीसुधिल्याये
दिनहरिज्यैसेसजेकोकरिसकैबष
जादिनकीछिबसूपसूकोरिकामर

कान ॥ ५ ॥ तानातरु बिहंगाडारपै करत
गुजारी जा जैसी फुलवादि श्रोत्र बिधि
नाहि सुधारी ॥ पुरन वासी सरदकी
छिटकचादनी रैति ॥ ब्रज बाला कै का
रनै श्री कृष्ण बजाई बैन ॥ ६ ॥ कोइ बना
वत श्री रहाथमै ॥ टूले ध्याई करत रसो
ई नारि चूत लोया लै ॥ आई लोपा वोड्या ॥ ७ ॥
सी सपै लियो चीर कटि बेत ॥ मिसी धा

२

करत फूल धरि नाक कान मे नथ डाली ॥ कोई छुडत ही ना जछा जहाय न
चाली ॥ पावन पैरी नोगरी हाथ मे रख
जोल श्री कृष्ण बजाई बासुरी सब नई
तर संजोल ॥ सुधिवुधिन ही सरी रागे
पिका आनंद छाई धाम काम कुल छाडि
पास मोहन कै ध्याई कथा वदरो की गोपि

काजिततालादीये जुड़ाया ॥ नतध्यातध
योगोपालकोवासबकैपैलीआया ॥ ए
आवतदेखीनारिस्थांमनमेमुसकाये
योबिताबनायोसांआजकैसोबन
आये ॥ येमोमैजैसीरचीजिनसुरतनही
तनमांहि ॥ मैइतसौअतररसूयाधरममा
नातीनाहि ॥ १० ॥ मिलीगोपिकेआयसा
मजैसेपुरमाई ॥ तुमसुधिवुधितहीसरीर

घोटकोविजियापाई॥ कैसैकपडापह
रियाकैसैकियोसिगाए॥ चात्रासूजो
लीजईतुमकहोकैसेबजनारि॥ ११॥
करदरसनघनस्यामगोपिकासोधीअ
ईअपनोबदननिहार॥ नोतमनमैसंका
ई॥ ज्ञासोहैजापहरियाकपडाहरसिगा
ए॥ लेदरणघनस्यामसोसबलीनोबद
नसुधारि॥ १२॥ करिदरसनघनस्यामगोपि

काबितहीकीनीदोवकरलीनाजो
डिनारिबोलीरिगन्नीनीतरसततर
सतपाश्योप्रचुआजघडीआनंद॥
हमरामनकीकामनासोपूरोगोकल
चंद॥ बोलैकछमुरारेसकलमन
माहिपिछानो नक्तनोगेसंसारनाहि
कोमोसेछानो तुममोकोअैसेनजो
उडजाकुललाज सोसोतुमरीका

मना सो सो पूरो आजि ॥ १४ ॥ ये म बैन सुन
नारि नो त न र छाये ॥ जप तप ती र थ दं
न की यो ज को फल पायो ॥ गोपी दासी च
रन की प्रनु तु म गोपि कै नाथ करनी हो
य सो ही करो फिर वी ते जा वत रात ॥ १५ ॥
सुन काम नि को बचन कु वि मो ह न मु स
काये ॥ रास करन की नू मि नाथ दे स ए क
ध्याये ॥ नू मि ब रा व र दे स के न न न न

ही हरिषलामूसा बिलबंबी नही तहं
ठाडे नंदकवार १६॥ ठाडे नंदकवार
नारिसो पोफुरमाई रासकरन की नू
मिगोपिकाहेगी पार्श्व विचोमै ठाडे क
झजी पारी लई बुलाय मंडल पूस्यो
रासको प्रनुहाय मुहाय जुडाय १७॥
रासअल नोदे मिहसमत मां हि बिवा
ही बिनागजे बिनु बाज रासना लात

पिपारी सुरालोकसुदेवतागण्डपाद
येपताय ॥ कृष्णचरनपरनामकरिबे
ताटेसाजमिलाय ॥ १८ ॥ सबवाजासिर
मौडस्यमकीबंसीबाजे बेणतमुरातार
मंजरीबाकोगाजे मद्राबाजततालड
फसारांगीसैतार काजमजीरादुदनी
सैनाईचूजार ॥ १९ ॥ कृष्णराससुनिका
नशिवसनकादिकादिक...

बिष्वश्रुकदेवमुनीदरसनकृष्णपे॥ ले
देवनदेवा॥ नाजहांछायरह्योआका
स॥ चंदरमांचाल्योनहीवोप्रडोरह्यो
छमांस॥ २०॥ देवकृष्णकोरूपनारि
मनमैहरसावे॥ वानारीकोनोराव्या
संपुत्रसरावे॥ चंदबदनमालोचनी
दुर्गासिजीअपार॥ बडीचतुराजगा
मिनीजाकैपापापलकुणकारती॥ २॥

रासतीपारीदेविहृष्ययूंआपादीनीतु
मकरोपिपारीरासटीलअबकैहैकीनी
छिमछिमधमधमधूधरापापामैऊए
काराछतीसुबाजाबजैताकोअंतनपा
रासराहृष्यरासकैमाहिछिमाछिमपा
वनठावैतेनवैतमुसकापहाथसूताव
बतावैफूदीदेवतरासमैराधाहृष्यसहे
तजपतपतीरथदानकोवैकियोदियो

फललेत २३ गात्रादिवैकुण्ठस
बकोबसिकीतागुरुद्वाराजीव
चित्तसबकोहरलीतामीनमच्छजल
जंतुसबकोहरलीतायेचित्रसमान
जमुनाजीबैतीरहीजबसबमिलाई
तान २४ मूतीपानीबेदपारकोपावतन
हीप्रेमनक्तआधीननचैपोपिनकैमाहि
निरप्रतताचतकृष्णजीपारीरूपसिगा

रायेकनादसबकोबधोसाजकंतकुनक
रूपदेमकृष्णकोरासदृष्टानंदबहि
मावे। अपतेअपतेपुष्पकृष्णकीनेटचटा
वेअंतरचदनअराजाणारीकृष्णलाप
तीनपोतकाजोरसोवाबासरहीननछा
यरधतिरफलकेफलआपओरछिव
बर्नकाईसबफलसदासमानचिमकितेआ
णामारूजदमकतिसिसजोतितारनकी

जै॥ सीतलमंदसुगंधपवनत्रिबिधक
जै॥ कल्यवृक्षवृक्षनलजलजधाम
स॥ नानमुतातीरथलजकृष्णजन्म
स॥ २७॥ लजकपिनमुदेवलजाम
सुरनारि॥ लजमोरसगराजलजचं
रिषारी॥ कंचिनगिरकंकरलजैल
मलप्रिधन॥ गोपनसुमुनीलजैकर
साचहन॥ २८॥ फूलपांनफलनार

धरनिपेआपाणीकोसंपतिमिलेवोजैसे
नैजायराएशिवसारदश्रुकदेवमुनीआस्त
तनुचारेकरकंचनकोथालआरतीबहु
नुचारेरिएकातएकानूमिकाहरषतह
मनमंहिजातिपातिकुलबंधुमैहमज्यूह
जोनांहिबग्याहणारीकीबोहस्याममन
मैमुसकावैतुमबिनयहआनंदपियारीको
नबतावैबीरीनागरपानकीपानीपानै

देता स्याम सखी को ताव करि प्रचुपी पवा
टिक रहै तब राधे कृष्ण मुरार जुगल नि
बमन को मोहै परमा नंद कि सो रसदा सुष
देवु मयो वै घनदा भिन जो डोब न्यो गल
बाहिर ही ली पटा पदेव जणवत चाकरी
सब हरष पुष्य वरषा प ३२ नक्त बल्ल
प्रीत पाल कृष्ण मत माहि बिचारी मेरा धै के
पासि बुरा मानत सब नारी छिन मांही मा

पारचीहरि नक्तवधावणमान आणहो
णीलीलाकरी नयेयेक नारदोका न्ह
त्रनाहीहुयो नहि होय निरतवो ओठे
नाही कोटचंद्रमानान नृत्यबंदाबनमां
ही येकयेक सो आगरी नचत कष्टकर
जोडि आण गिणीती गिणीती नाही पणक
वति हैसो कोडि उध नही सो मपाड नही
सुषके रनपावे टूटत है मुज बंदहि गो ज्ञं

नदनहिमावैरूमरूमआतंदनयोऽ
गात्रामुसकानागाधरआतंदकोको
लाकरेतबमानत्रयइतिश्रीप्रथम
सरमाशा॥६॥ दोकरकृष्णनिहारगोपि
कामदछकिनारीहमसरसीसंसारत्रो
रतादूजीनारीसोब्रह्मामुनिदेवतागु
नगावतबेदपुरानसोहमपैदोदोषडे
जितछायोबडोबडोगुमान॥१॥ नंदवन

नकीसैलसदाश्रमतकोपानासुराश्र
छरावासजागनहिहैमैसमानाविधरा
नीसागरसुताश्रीगिराजाकुमारसोहम
कोपावतनहीओरकोनकहनारिर
देषिकसकौरूपनोतमनमोगरनानी
वैतीतलोककेनाथवातबनसैनहिछ
नीरूपहमारोदेषिकैइतछायोबडोगुमा
नप्राणपियारीसंगलेप्रनहोगोसा

ननु दीपततांही कृष्णसकलमतसधव
राई पंथपंथकैसाहिचहुदिसिदृष्टिचल
ई कहोरिसुषीकैसैकरैफैटिगोआका
सादादबानीहोराईसबलेतसासपर
सासधालीनोसयनिहारसुषीपेकदीपी
नाही सोराकैसंगिआगिलगीजितहिब
डामाही जैरुकेहोपेपीधूणतसीसकुं
नपोदिकलचितअसाहायबूटिधर

एगिरीजिनपडोराभैना ५ रही
नरजहापचितमैलगिरहीफिरणी
उतहासिंगरद्वसीदीवततरणीबैव
डकपोलधरितेनरहेजलपूरिधरत
चरतपावसूजिनगयोबदनको ६ ह
नैनसबलालनीरजिनधमतानाह
जलनूरबिगारनासिकामुषछाहू नो
तकछूआवतना ३ हवकतदृष्टनव

रोगी जूधी रजन ही कुत त परत पछार
प अरि क हा स प ना के मा हि क छ ने रा स
र चा यो प्र नु दो दो रूप दि ष्य प्र आ प ए म
न न र ऊ यो त न म न प्री त ल गा प के छ
डिा ये व न आ प श्र म त मे वि ष आ प डो
स मि को न ज न म को पा प ३४ ना ठे ना
ठे दे व कि यो ज दि पो सु स पा यो यो अप
ए आ न द दि धा ता ना हि मु हा यो दो दो

रूपनिहारकर करी कृष्णसूत्र सोच कि
यो आवत नही कित ऊठ चला वो सो ज
ए लियो सो ज बिसवास कृष्ण डड ए को
चाली लिया हाथ मै गात सुरत लै गोवन
माली कृष्ण रूप मन मै बसो कानुं जड का
पावै काज रोचे अगि पा ला पो जिन पडत
न साज पावै २० वै आनंद के पाव धूम ते ५
तवत चालै देखि देखि पद चिन्ह सकल हि

बडामेसालै॥ वामतवारीरूपकीलीपाक
क्षमकोमोहिजादूकरअपणकियोसूज
तनाहीकोहि॥ ११॥ सकलसंगील्योदेखिद
गाबाजीसोकीती॥ लियेरुक्षमनरापद
याअपणीनहिलीती॥ आपजातिजानी
नहीहमसिरसीसबहोप॥ वोकामीछोन
दकोलियोनावसुमोप॥ १२॥ व्याकुलबद
नसरीरुक्षमुषमुषसूबोलै॥ दृष्टदृष्ट

पास कृष्ण कूबूज त डालें बटपी पल
सुन कदम तुम मुनो बीनती श्रम जा
वत गुण जूले नही कह हूँ मै बताने स्थ
म १२ चली रह सूर्यो न गोपिका न त रमा
नो बिना कृष्ण के हेतु ब्रज तन का रिपु
जायो रंदा पै सब मिलाई पूछी कृष्ण ब
ताय ये म्हा रान कृष्ण की कै से सी कुं सुर
स १४ विचरत विचरत जाय मधूपुष्प न की

३३
डारी लेत बास गुजार पुष्प की न्यारी न्या
री करि करता गोपी कही जानि कृष्ण
को राहे कलिया दुष पाप सो डकर क
पडी के संग रा पात पात के माहि कृष्ण
को टटत तारी टटत टटत जाय पंखे
बैठो डारी खाये तदारी चरत की प
डे तुमारे पाप गोपी मराई दावो यूक
हे कृष्ण सजाय राधे त कृष्ण को बैठा

पिकाहृच्छहलावै। कहलुमे छिपेबन
सामछूटतकरनीवैआवै। हेतरवरण
सनचंडमांअरजकरैकरजोर। तुमछा
णीधरणीनहीकहुबताचितकोचोर
१५। चंदाकामीआपससीतकुएनेवजै
पडीजोतिमैस्यामदेधियाचोडैसूजै। गो
तमरिषकीअसतरीरूपदेधिललचाए
कपटीछलकरिकै। आपोआपोकलंक

लगाया ॥ कहत सखी सम काय दृष्टव
र वै अपारी ॥ इत मूछाती नाहिरहत
जग कृष्ण मुरारी ॥ सब को सीतल चंद्रम
दो कूआन समान ॥ कैचक वी के नाम
नी ज्यो का पति वित दुषी पिरत ॥ एव
त सुवोय कडार राधिका कृष्ण न चारै
जायो तो हि छिन ताप को ली मरती करो
मारै जा सुवायू कहि कियो जो तो हि दि

नमो गारबायारं दोजिन नैन बिसालम
गणी देषी अती इन देषे घन स्थान दरस
करि हो रही माती हे हिरणी नृप गारकारे
जावत ज्यो नव चाय संग प्यारी तन साव
रोकहु देष्यो होत बतय २१ फाटा ज
असमान लो कहै के सेवारी अत ज
संसार नारिना है देष्यो मी

मिरोमुणोसषीसबकोय॥कोनारीसंस
मे॥आलिप्रीतमदुषनहीहोय॥२२॥अ
तकृष्णकीपादिहियामेचलतकटा
मुणोहमारीपीरुजकोहेनुपरागी॥अ
रिपरनुपगारीकोनहीरुजतोमकोम
हि॥घापलज्यूतडफतफिरैकोईबूरे
ही॥२३॥ज्यूचंदोबिनरातिनूपबिनरे
बिचारी॥ज्यूपूजीबिनऔसपीवबिनऔ

नारी दो कुल लागै पति बिना बाण चालक
चोटा तन बस्तर श्रीगार सब बिना मजुरी पो
टा रधा कै तस घीयू को पदुषतु महा थन पा
वो घर तुमारे कंथ को नही नत पै जावो
रुष्म रूप सो मन लागै ओर जाय को न कै
पास मीठा जल सागर न स्थापण चात्राम रे
पिया सरप मुषधर बैन बजाय हेमारो चि
त न डार्ड धाम काम कुल छाडि पासि हम तु

मरै आर्द्र प्रतमै बिपरी की जन्मि जाय के
 कर प्रीत था आवता गोरी करी जत की नही
 दकुलरीत रक्ष आवत तडफ वन लेष
 प्रतम हेत जाणायो ह प्रपत्ता पुन ई तुम दे
 तुमै बिड दिप्रायो
 नागी ब्या
 मत ही प्र
 सीर

मसुरा जव
 कदे नहि
 जोय
 नागे

उत्तमाप्यारविनारीकीजातिआपकैसे
गपधारी। हमनैकाचोरीकरीउनकीन्हीक
हाटहल। हमछोडीबनतडफतीबनलेयप
धारी। लखयेकसपीसमजायनईतुमके
सैचोरी। करमकरतहैरंककरमसुराजक
रोरी। परवरआनंददेबिकेसबीकदेनहि
रोयसोबावैसोनीपजेकहागीहूकाजोय
एदयानहीतिरदर्शविधाताअधबनायो

जेकर पूरव पाय और दुसरा हिनुगा घोई
नवदावन चीचमै मिले विधाता बार पक
डफैट मुका जडै देगुल चित की मार ३०
पारी कथ बिजोगा सघी कोई पूरव की हो
करे विधाता पाय डंडजू को जूरी हो को
र बिधाग डिकरि कूज टकत दुस पाय क
सगा पातो जा एदे सघी आपा क सवणा प
३१ बणी पूतना पै को वन गो कल मे की

येकतृणादितरूपधरि के यो नो तत्र अधका
र येककृष्णकंठालागीमास्वोपटकपछा
र ३२ येकसकटासुरहोपरूपपागडाको
कीन्हा ३५ येककृष्णकोरूपपावकीठोकर
दीन्हा येकबकासुररूपधरिचलीकृष्ण
कीलार येककृष्णकोरूपधरिचीन्गी
दोफार ३३ येक

एकैकअथासुरहोपपडिमरि ममुषफासो
तीफोरी येकजसोदाहोपकृष्णकीलेह
दोरी ल्याकुमलकैबाधकैनेतीचीरव
नायदोपवृत्तनकोसुधरिपडीहोएअ
रजायअधुंयेककृष्णकोरूपधसीतमुषमा
हीमासो जाअमुनात्रैसनातकरिधारि
बस्तरजलतीर येककृष्णकोरूपधरिचो
रलियेसबचीर धृषवणीयेकगोपाला
ऊलेबनमैध्याईरंभावाल्याजीयेवु

४ और गालनी हो पृष्ठ को नाचो बोले

नाय बैठि सब गोर सभाई संज्जु बं
नाय कै मुख धर बै न जाय चरती
टेर सुनि दोडि गाय जू ज्ञाय त्रध
रुख को रूप दही कूं घर घर डोलै
ऊ मना चत रुख जीवाल न पेद
न कुसी होत दध देत तब नै सोष
जि ३७ ये क रुख का रूप बैठि मा
कै मांही और गालनी होय दही बेच

३७

ताही॥ आमारिगा आडेफि रेहन देरघ
रजाय कुंनदानली पोकाडो कियोनि
विनिविपिड छुडाय ३४ चौव्या रूपव
नायमधुपरजापरचाये येककृष्ण
जीहोयमाणो वालप्रिनाये औरचौ
बनिको रूपधरिलेरचलीबननाथ
रुचिरूचिपापोकृष्णजीबुलाईलीपो
सबसाथ ३५ येकनागाको रूपहोयफु

कारचलाईयेकरुसजीहोयताथसिर
बैनजाईयकदावातलरूपधरिकीईश्र
गिनद्यानयेकरुसकोरूपधरिकराई
सबकृपाता४०येकरुसजीहोयइको
जिपनुडाईयेकइइकोरूपधटालेबरस
एअराईयेकनुपरणंगोलकरनिप्रधासो
गिरराजायकइइसरननपरीप्रनुतुमको
मेरीलाज४१येकरुसजीहोयइ

बैनवजाई श्रीरटेर सुन कान नूल सुध
तन की आई मंडल रास वना पकै वौल
त आनंद बैन गांधा धर कहै गोपिका स
ब करत कृष्ण जूचै न ॥ ४२ ॥ इति दुती प
स संपूर्ण ॥ वैष्णारी धन स्यामति रघु ते शत
उत जाते मित्र मंडली जु डै देष सुन गोर
बताते या सब मित र बैव ते ह्यार चत है
गाय या सिला पर मित्र सब प्रीति छागि

दध्यायशः चलेऽगारी फेर सैल आन
दसौं करते निरख निरख वे नू मिधूम मुड
मुड पद धरते तट जमुना अति छावर न
तम नोहर धाम सुणि प्यारी मध्यां नमै हम
करत गवाल बिश्राम र यक आया गिर
स्ता नरुषत हं वै तव जाते ह्या प्यारी ह
म वै तिसा फकी ननु लाते इत रवर के
पुष्प फल सप्ता साथ सब ल्यात टां किषा

लेटोरै हरषनिरषमुसकापनक्तकेबद
लाजोरै विधिआनंदअसतांतकरिफे
रिआसरवरतीर छाटिछाटिजलकेस
कापैरलीयेतनचीर ॥ जैसाछासिएगा
रक्षजैसाकरदीना ॥ मिलाहाथसूहाथ
गवनसरवरसूकीना ॥ कहाछायाकहांचा
दणीप्रचुकरिणारीसैल नसीनजुगामैका
मणीनसानजुगामैछैल ॥ अथरमधुरमु

सकायनाथ त्रैलोक्यमाई तुमसुणोहमारी
बातयेकयामनमैआई सुनपारी तोसैक
हूतुमहोअबलाकीजाति कहतबैमसंसार
रमैजैषुवल्लेकेसबनराति १२ जानलईम
हाराजिआपफुरमाईसोई हैकोईसंसार
अपरबलतुमसोकोई जोमरजीमहाराज
कीलेखूस गुथाय नहीहथी नहिसाथकी
गुथैकोफुरमाई १४ मोयारीतुमपसिकहा

सो अब हो जावे ॥ तां तां रा के पुष्प मा ग जै
त सु र जै ॥ मै सिरा गूथू आप का सु दर क ली
ला पा ॥ सो ब च न सु ति ता थ को प्यारी
म न मं स का पा ए ॥ पे क ट छ की छ ह सी
री जी जा वै ता पा ॥ सिरा गूथ न के का ज पुष्प
ले ए के भ्रा पा को ली जु ग त ब न प के चा
ले आप मुरार ॥ वो मो कू मो कू कहै फु क फु
क आप वै डार ॥ ए ॥ ध न ध न्य ह म न पे र ज मै

आदेपाये निरकार जो ते समूप धर धेल
एआये प्रनुयोगाध्यान आबो नही बिद
पार नही पात धन्य सूघन सो हो स्थम आ
बपडे जि सी पर हाथ एशा तीन लोक को
नाथ पुष्प को इत नुत डोले आये हे तुम
पासि पुष्प दो औ सै बोले जरद गुलाबी सो
सत्या सांमरांग अत लाल

कियोतएकोकामए॥ सबअनूपए
आपहुअजीष्यनकरलीनां कनकम
एनकामामसकलजैसाकरिदीनामा
लाकंठीपचमएणानुजबधननुरहार
पोचीगजरामूदडीसबपुष्यनसिगारए
८ सबपुष्यनसिगारहुअपणाकर
लीनां गजरालूमलगायछेलबैणियार
गजीना प्यारीमनआनंदकरनप्रनुस

ज्योत्स्नामस्य त्वात्सु
वैकचलापस्य त्वात्सु
गोपालचले त्वात्सु
रूपबधापस्य त्वात्सु
सरूपश्यापस्य त्वात्सु
धस्तुतत्वात्सु
स्वर्गात्सु
कोष्ठात्सु

मधुपाती कों जानि मधुपाती चलि आवे
गजर निरुषत कंठ को ले कर स्याम स
रात ॥ ई चरज का सुंदर नयो इत लो मनो
हर हाय ॥ १ ॥ चलत मदन मुख मो डि आ
पर से न चलाते हरष निरुष सिंग रहि
ये आनंद नही माते ॥ गल बांजु कर ही
नर नपै नर कर हे दोउ नैन ॥ सुंदर सुंदर ॥ २ ॥
आप होयू कहत प्रेम मुख बैन ॥ राणी

रूप निहार धन्य धन्या नमो गौरी सखणा
रिन सो नौ तह सखी की रपा जानी न
मात चालत हर सखी कछु दत न रा
ला कदे कह साति न रे कदे कूजर वा
ल रागाने न कामान सो को कित्य सो वा
बोनी सिंह मध्या कामाल जोतिका चंद व
शानी मुकता फल नथ ना सिका अतरा
मुष पान जुग जननी न घस पूक चिध

होतब्रषान ४॥ करसैकरमसकाप्रका
मकेनैतचलाये॥ चतरपिपारीकंधव
दनलमिज्जूमसकाये॥ काणारीतोसै
कहमोसैकहीनजाय॥ लघिलवितुमरा
गसुरीवैमोसनअतिहरमाया॥ ५॥ ::
पालेगाकीनांतिकरिकारीगरसोईसि
रसालूकीकोरईसीनादेमिकोईअगे
याकाबरननकरौसोहतराअपारच

वगछाकोईसीवणजडदईबहकिरा
रुद्धपुष्पनवीसिरसागजितोनोंत
मुहतीकरनफूलकधूमकनकमाणे
सोनापातीमधुपातीज्योपैपैअलक
फलकबलमापापारीतुमरासूपसोच
दचलोनहिजायाअनहीइसीकोचाल
इसीनादेसीवाईचंदनिजंरलुगिजाय
चलोबिरछनकाछाईने

होतबमाना॥ करसैकरमसकापका
मकेनैतचलाये॥ चतरपिपारीकथब
दनलमिज्जुमुसकाये॥ काणारीतोसै
कहमोसैकहीनजाय॥ लघिलघितुमरा
राहूँकेतोमोसनअतिहरषाय॥५॥ः॥
पालेगाकीजातिकरिकारीगरसोईसि
रसालूकीकोईसीनादेमिकोईअंगो
याकाबरननकरोसोहतराअपारच

रधपुष्पनयीसिरसाञ्चाजितो
मुहूर्तः करनफूलकः धूमकनक
सोनापाती मधुपाती जूपोदपैत्र
फलकबलसायाप्यारीतुमरासू
दचल्योनहिजायः नहीदसीको
दसीनादेषीवार्द चंदनिजरत्नगि
चलोविरछनकः छार्दयेकपेक

गरी गोपी है वृज मांही ॥ तुम सिरसी नादीष
ती मोयती न लोक में नाहि ॥ सिर के सरी
की ओर कहु कालागत प्यारी ॥ पापा पल
कुणकार इसी ना सुरपत नारी ॥ को साचा
काबीच मैं बिध टाल्यो तुम आ ॥ जनम ज
नम हरि से कहूं द्योइ न प्यारी को सा ॥ ए
पराज सुष ज्ञान पाछिला पुनि सो पावै ॥ प
डे पुन्य मैं ओट ओट जमै रे जावै ॥ दो लोचन

जैसे चढे जू चढे धन समै बाण लागत वीधे
काल जो धे चतक पै पिरान १० रागा तट सु
मदेव नूप को कथा सुणवै तही नक्तन
हि सान मूढ को इ चर जल्यवै अलखव
हानारा नह वै सरलै रै जात नक्त मनो ह
थ कारनै कर कामी ज्यो नात ११ सुनि सि
पारसरूप तुरत मन भै गर जानू फूव साच
की बात रुझ की बार पिछानौ कछु मुषजो

तिघटापकैधस्योपावपरहाथ वैमालिक
तिहुलोक मकेप्रभुजाएलईमनबात ॥ १२
बोलैआपनदासनईतुमकैसैणारीचो
लोसोहोयजायनहीनूमंडलसारीकहो
चरननचाटोलणोकहोकासूनैषाय ॥
कहोमुद्याणसजलागीकहोकूमुप्रकुंम
लाप ॥ १३ ॥ नौतबारकीफिरोआपसंगतुम
नाजानू जैसाआपकगोरजसाहीजातपि

छानू तुम बन बन टकता फेरो पड़ी आप
की बोनि हम अब ला को मल घन मि का च
ल जानि १४॥ बोले बदन मरो डिहार मोय
चटि गई नारी पै डपै ड दुष पाप कहो पाह
असवारी ॥ इतनी के करि बैठा बोले पा
र बाय मर जी हो तो ले चलो हुकम करो घ
र जाय १५॥ पड़ी चूक मो माहि आप कूपाव
चलाये देष तुम्हारे रूप नही कुछ सौ दी

आये। अब पांचाल ए चूना ही रोस करे
मति आप ये कबार तो कर हत है नूल चू
क की माफ। १६। तुम प्राण न आधा रू
ठना बोल सोई प्यारी तुम उपराति लग
तिना मुज दू कोई। सब कछो डी बिलष
ती लीये आपे कलार उठि चालो वै आव
सी तो पड़े सांड मै धार। १७। तन मन हाज
रि पा सदूर ना तुम सूप्यारी। तुम दासी सिर

दारा॥ बचन पूकह्यो मुरारी॥ इतने मन मै क
सके तुम हुकमी मोय जानि बैठो काधे ले
चलू फूवसा चनही सांन ॥ १५ ॥ जानक ह्म अ
धीन तुर नई गढी पारी॥ दुपटा कमरिल
गायन कइ बैठि मुरारी॥ सिर सा लूक टक
सिगार बगु मोयो पान नग चरण चढ़ा
लो प्रनु होया के प्रंत गगन
रण पर पावै ह

योगमायाखकी जैसी नीता अतिमनमै
स्वरज्जपोस्तनतनै नचलाय लै
फाडतबोटणी कितलुके छिपे घर जाय
२० नही प्रोज कित चालि नही कित देख
छाई हूपो अचं नो नो तरु सको मन को
ही फिर तो नै चै जाणि पाये रु स छिटका
काची को मल के लज्जू पड़ी मुरछा पाय
२१ पटकतां वप छार हाथ कूजो रपछ

राफूलमासूमज्जरसूतपहुषाव
नजेठमासमैजलबिताज्जुबालूतड
मीनरशवसुंदरकरसांमनषनसूम
सुदारीजिनकलईनकेसांहिजकए
लरहीनारीदूतगाहणांपुष्पकाछा
मुषकागाहकटारीरूपकीजिनर
कालजैलागिरशअलकनुलकमुष

यनही कछूना हलावे मीलेनैनकेपा
टकटकाबरनूजावे। पीपकजलमुष
सोपडैसोचावेमुषपांन॥ इतउतहो
रुझाजीतातैरुमिगन॥ २४॥ जोजन
नाथचिडापहियामैगारबानपायोवे
प्रांननआधाराखजिननाहिमुहापो
कहारंककहारावकोगारबकिपोदुषहो
यकैवतहैसमारमैगारबकरोमतिकोप

करतां करता रास सकल सोदी आये
इतवत चो घनिहारि कल को वै ना पाये
कल कल असे सही फेर नई तन का सि
अरी सर्व तसं कै संमिटे इमत तणी पिषा
सार्ध अति दुख करत बिलाप धी रह रदे
नही ल्यावे दल कत कर सिगार जीवित न
नाहि सुहावे वंदा बन काट छमै उर ऊत
फाटत चीर ऊत बैठत गित है जूचले

यनही कछू अंग हलावे मीले नैन के पा
टकटु का बरतू जावे पीपक जल मुख
सो पडै सो चावे मुख पांन ॥ इत उत हो ॥
रुख जीता तै रुखि राव ॥ २४ ॥ जो जन
नाथ चि डाय हिया मैंगार बाउ पायो वै
प्रा नन आधारा रुख जिन नाहि मुख पो
कहारं क कहारव कोंगारुख कियो दुष हो
य कै बत है संसार मोगारुख करो मत को प

करतां करता रास सकल सोदी आये
इत उत चो घनिहारि कृष्ण को वै ना पाये
कृष्ण कृष्ण जे सै मही फेर जई तन का सि
अरी सर्व तम कै समिटे इमत तणी पिपा
सख अति दुख करत बिलाप धी रहारहे
नही ल्यावे डल कत कर सिगार जीवित न
नाहि मुहावे वंदा बन का दृष्टि भै उर ऊत
फाटन जे ऊत वै वत गित है जूचले

किसीकेपीर २४ सुरत नही तन मां हि
दुष्पारी चटकत डोले ॥ इत न त हम तुम
जाय परस पर औ सै बोले ॥ असी हो वत
का औ सै किये न नापा वत नां कोय ॥ अए
होणी होणी करै जे दगा बाज दो होय ॥ २४
पर न पागारी कै त बिरछ को फूव सोई द
या नही निरदई दसाना देखा कोई पर न ॥ ३
पगारि नरीत पा पर दुषस दुष पाय ये अप

नंदुषदेयकैफूलफूलहरसाय।२॥
विचरतबिस्वतेफेरसकलसरवरपरश्र
ईनीरतीरकी८आयबासजलमौराए
ईअंतरचदाणबासजूरदोनीराणाय
फूतनहीसांचीकहुलाणारीसीसनहुवाय
उपरउपाणीनीरबूजल्योफूतनबो
लेहेदुषकाटाहारचोरकूंटुटतेडोले
दोचीजनकाचोरहेचितसातणिरासां

ह्यापारी असना न करि पारो सी सन्हवा
या तेरे सुषकी कहत है कित कू गये बतों प
३५॥ नती पोत संलहर जु गल चरण न पे
ध्याई अरी ईत कू गये बतों प धरिणि पर
ना डकु काई पारी मोहन मो जल मिक
बुधी रज मन आया॥ तुम गुण वत्ता साच
हो जल कु जोत सराया॥ ३६॥ मो जषो
जका चिन्ह नैन संपरषत जाई सिराया

लतहांपडेघरनपरकोप। आरीआरीदोषि
ज्योबोलीताहीहोय॥ ३७ ॥ गावतबेदपुरान
मोजमूनीतापावै। सोरजबालागोपालवद
बनदुद्याचावै। ॥ ३८ ॥ धरदुजबालको
कोलगांतामसिराय॥ ३९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
ससपूरण॥ पुष्यनमिनिहारदोरदोमोज

ह्यापारी असना न करि पारो सी सन्ध्या
या तेरे सुषकी कहत है कित कू गये बतों प
त्र प ॥ बुली पोत संलहर जु गल चरण न पै
धार्इ अरी इत कू गये बतों प धरिणि पर
ना डकु काई पारी मोहन मो जल धिक
सुधी रज मन आ प ॥ तुम गुण तं ता सा च
हो जल कु जो त सराय ॥ ३६ ॥ मो ज मो
ज का चिन्ह ते न संपर मत जाई सिराय

एकीगेरनिषतीकवेआर्धचोषेचो
लतहांपडेघरतपरकोपआरीआर
ज्योबोलीताटीहोप॥३७॥मावतवेद
प्रोजमूनीतापावैसोरजबालगोपाल
बनदुद्राचावै॥प्रमचरुममोव
मचरुवाचरुनप॥या॥मा॥धरुदबा
कोलमन्तासिराप॥३८॥इति॥चोप
पसपूर॥पुष्यनक्षमिनिहारदोर

ह्यापारी असना न करि पारो सी सन्हवा
या तेरे सुषकी कहत है कित कू गये बतौ प
त्रप ॥ वही पोत संलहर जु गल चरण न पे
ध्याई अरी ईत कू गये बतौ प धरिणि पर
ना डकु काई पारी मोहन मो जल धिक
बुधी रज मन आ प ॥ तुम गुण व ता सा च
हा जल कू जो त सराय ॥ ३६ ॥ मो ज मो
ज का चिन्ह ते न संपर सत जाई सिराय

एकामरनिमतीजवेन्द्रार्धचौषेचौषेफु
लतहांपडेधरनपरकोपश्रारीश्रारीदेषि
ज्योबोलीतादीहोपत्रः गावतवेदपुरान
योजमूनीतापावै सोरजवाल गोपालव्रदा
वनदुद्राचावै ॥ १५ ॥ मन्त्रांशोऽंशः
मचरनचित्तंनयागाः धरदः बालको
कोलगन्तागसिराय ३८ ॥ १६ ॥
मसपूरण ॥ पुष्यनन्दि

पिछानी॥ सिराथतकी वात नारसु कैसै
छानी॥ वालैगाकी लेरल मिमनमै कियो
बिचार॥ छीदा छीदा पुष्प कालीनां रुच
निहार॥ ताजा ताजा पुष्प समीक्षा काम
आये॥ पालैगाकी लहरवी चमकास
याये॥ इन छीदा इन साकडा क्यो करत न
वरफूल॥ अक कपडी की छाह सया को क
हो मोये मूल॥ सब को कियो बिचार एक

यामनमैधारीमोमननपोबिधारसधीया
सुनोहमारीवासरपैत्रैसनांनकरिहान
नगूथोसीस इतनीलजानानईहवांज
हुजादीसाइदगाबाजबेलाजसधीकुछ
सुकतनाहीतामैंकामीफेरकरीअण
होणीकासीवापारीकारूपलघिहो॥
हैअधीनतीजावनमैकोनहीहकमकि
तोसोकीनावाकामअधबलअधैअध

पिछानी॥ सिराथतकी वात नारसु कैसे
छानी॥ वालेगाकी लेरल धिमन मे कियो
बिचार छीदा छीदा पुष्प कालीनां दृष्ट
निहार॥ ताजा ताजा पुष्प सषी ह्मा का म
आये॥ पालैगा की लहर बीच म का म
पाये॥ इन छीदा इन सा कडा क्यो करत ब
वर फूल॥ प्रक कपडी की छाह सूर्या को क
हो मोये मूल॥ सब को कियो बिचार एक

सुना हमारी वासर पै औसनां न करिहां न
न गूथो सीसा इतनी लज्जा ना नई न वाज
हुजा दीसा अदमा बाज बेलज सखी कुछ
सुकुत ना ही तामें कामी फेर करी आए
होणी कंही वाप्यारी का रूप लियेगा
है आधीन ती जा ब न मे को न
यो सो द -

जो बत कै मांही मदवंता राज राज पील कुंमि
एता नांही ॥ येक ज अंधारा ज काइ क अंधा
धनवंत ॥ अंधन अंधा मूरि मा सो न जे नही
जावंत ॥ ५ ॥ येक अचंनो नो त स भी मो म
न कै मांही ॥ अण होणी हो जाय सुणयो का
रण काइ ॥ ज समत नो रे नंद जी जानै त छा
नी नांही ॥ कहो बूला के सैन पोह सब स
कै मांही ॥ ६ ॥ जैसा जैसा जानि ता त सुत अ

तरनाही पैकाजी मिल जायगा टर है कैसे
माही बात रुणी वितरुण है फिर रजनी
घान व्याकुल सेना काम की की न्हा ना कु
छपा ना सु सु दर रितु पति से न रु मत न बी
र कहा वे राज चा वत राज चाल चीर के त
थर वै मन राजा नू पर धुनी न में कहा वत
वान हा व ना वत मर चले या रितु पति से
ना जानि ४ - दगनु त है मे प्राप स भी व न

योनुतायबडिप्रचुतापाई ईनबातनको
देमिसकलजलमाहिजवाई इंदुसेचर
ननपडै सबप्रजाप्रतिपाल नारीसाव
नवनफिरे तुमकरीजवोतवुधबाल ॥३॥
चलोआगारीनुतिबठिकहाबातबनावै
होहोहोगेबारनहीतोदुआजावै नुतिआ
गैवहामोचली करिसांपनिपररीस दईक
रतोरजी नो ननुपुसपनकसीस ॥४॥

आरनहिकछुचाहिननसरूपनिरै दे
दरसएछिपजाएनहिरंगमै नैगडारक
हतोहमकोदरसद्यो कहछाडोननमोहे
सोतिपोनकाजोरमुयाअगनिदूणीहोइ
॥१४॥ इकतरवरकैबीचचीरकाजोईआई
ईकसषीसबटेरदोडिकाहीपैध्याईआप्या
रीकोदेमिके मडीसकलबतलाय औपण
मतलबजाणियो अबजाको

यापाकोफलपापरोसतोतुममतिन्यावे
याबनमाहीकोनइसीकोचेतकरवोओ
गुणनपरिगुणकरैमाहारुह्नकीरीत॥
फतरषाफलदेतहै॥ तुमसुनिब्रीछनकी
प्रीत॥ १६॥ कोइहेलादेतहातसुचरणहला
वे॥ औगलीहाथमरोडिबगलमैहाथचला
वे॥ ननकोकचुसोधीनही॥ दिनहमीत्रे
करात॥ कानुजडकागावहै॥ कुएदेहीदुष

पाता ॥ येक सषी नुन मां हिना ग को मंच
चलावे ॥ इसो गार ड होय चोर को पा सि बु
लावे ॥ सुगरा को होतो मंच सु करे जीव पर
धैरै ॥ आया बिन मित ता नही ॥ यो है नुगरा
को जहर ॥ धालो टल प लोट दो होई सषी
जीन के पर की ना ॥ बाती चीर बनाया ना सि
का कर सुदीना ॥ दो का नन पर मुख धर्यो ॥
लीनी अकलि नुपाय ॥ कल कल अये अ

री नही चेत करे फी रिजाय ॥ पडत का
न जण कारतुर तही न्गरीया मोली सोव
तले तजणय मास कानी द्राघोली ऐक स
मी सी रहा थं दे बै ठेक सो नुठा प ॥ ऐक ज
दोरी नीर को लाई मुख धुप लाय ॥ रंग बो
ली मुख धुप लाई सुणे रा बात हमारी ॥ गे
ह धर छोट का पद पा नही ली बी थारी हम
जाणा तो लो गयो ॥ छाडि पयो बन मोहि ॥

पटिकारोनी रदर्श वोकुणकोसग
रशनागवानतु जो होत कक्षसे कर
॥ ज्यो जिन कुसुम आये जिन को दुष
प्रासी दुष सुष छाया ब्रह्म की रहत न
कसार असुर नमै बासो बसो बारा
ककुमारि र तीन दीसाल भिन्नान
नमाही होती पूरन चंद प्रकास गह
गही सोती ज्यो ज्यो हरि बीपता देवे जं

री नही चेत करो फीरि जाय ॥ पडत का
न न एकार तुरत ही न्धषीया घोली सोव
त लेत जाण्य मास कानी द्रा घोली ऐक स
षी सी रहा थ देवै ठेक सो न ठाय ॥ ऐक ज
दोरी नीर को लाई मुख धुप लाय ॥ रंग बो
ली मुख धुप लाई सुणो रावात हमारी ॥ गो
ह धर छोट का पद पा नही ली नी थारी हम ॥
जाणा तो लो गयो ॥ छा डियो बन मोहि ॥

कपटिकाशेनी रदर्शवो कुणको समी हो
ई रशनागवानतु जो होत कक्ष से करी प्रवा
सी ज्यो जिन कुसुम आया जिन को दुषवी
आसी दुष सुष छाया वृक्ष की रहत नही
ई कसाय असुर नमै बासो बस्यो बास जा ज
न ककुमारि रती नदी साल भिजान ऐक
दीन माही होती पूरन चंद प्रकासा हसोत
नाही सोती ज्यो ज्यो हरि बीपता देवे ज्यो ज्यो

मत पीठ कुबाल कज्जु बलाय वपी
तामर मुकट वह वमोहन वजाय ॥ २५ ॥
मुख के केश सवारि माग की रक्त फडक
वै मीठी मीठी बोलि सखी असै समजावे
तु तो बहुरी बावरी वेबु दिसो दुष पात
दाग बाज की प्रीतरी दहवत है दिन राति
॥ २६ ॥ धरि धीर जमन माहि चित को काह
बिकला वै जमोहन मिल जाय मसंहीस

बमरिजावे तब मन मै सोधी करो पंडस
लोचाल गागा धरै रघो आ मिल सी गोप
ला ॥ ५ ॥ एतल सूर ॥ ॥ न
दुसरा कछु नांही दोस है अपणो मांही क
कारी सो पीत बुधि कछु सोधी नांही जकु
दो काल लगे तो होवत है दुष दाय सका
न सु पीत करि कहो कैसे सुषयाय १ कारी
पगारी ऐक सखी मुख पर नां सोती ज नोल

लगा जाय जातमै हसी होती। ईक काला
सै जीव जाको जावत ना काल। घरमै का
लानी कसै तोले कर जा के बाल। र काला
ओ गुण घाति कुणिसु प्रीत लगाई। नीस
कपटि ज्योटे र रास करि सब छटिकाई।
नपरि सुंदर दीवता। माहि है दुधार जैसा
मोहन निकसा। ज्यो मुमसल म्या न कर
रा। बोली कछ सुण पास है दुरा नाही

सबकुदीछीटकापत्रापकामनकमांही
करताकरतारासमैआपोतुमबैराग प
रनारीकुंजानिकेजासुंकरायेत्याग ४
हमछोडाबरामकष्टतुमनाहिआवे
वै रागिनकीरितजागतसौंदुरकंहावे
चटिकमिटकसबछाडिद्यो करिबैरागि
नेस मोतिमुकटबुतारिके तुममुकटब
णाबोषेस पत्रंतरचंनणधोयगानपरि

जसमरमावो बसीधो छीटकाय हाथले
नादबजावो बाघरधारणको छंडोसा
लदुसाल बनमाला त्यागन करौ तुमप
हरिकाठकीमाल ६ जतुंम करौ विचार
ऐक्याबातबीचारो करिकरिनां करीषी
तनां सोचहमारो जसमत बूढे नंदजी ॥
जये नुनो सुलला जतुम अब वै राख्यो ॥
तो कुण करसी वुण ठहल ॥ ७ ॥ दयावान

नीरदर्शसषी कहा कसै होगा अकनार
साओरजिणोका सुणिया पोगा अरीग्र
नांजननावां नहै गइरास गारनाप
जासौ हरि छीटका गायै योजा सुदुषणाप
कोन पुन्य के जोर कछन रासरचापो व
नादीक सुखनाहिज सो सुष आप दीषापो
ऊरम आंकट लतानही फटचलि आपो
मान कोण जनको बरिहो सो आकरि

जसमरमावो बसीधो छीटकाय हाथले
नादबजावो बाघरधारणको छोडोसा
लदुसाल बनमाला त्यागन करो तुमप
हरिकाठकीमाल ६ जतुंम करो विचार
ऐक्याबातबीचारो करिकरिनां करीषी
तनां सोचहमारो जसमत बूढे नंदजी
जये नना सुलला जतुम न्नदवै रागल्यो ॥
तो कुण करसी बुए ठहला ॥ ३ ॥ दयावान

संग्रह नवाय ११ ऐक देस मुलतां नताह
हीराणा कुराजा ताके सुत प्रह्लाद नयो
क्त न सिरता जा वन कष्ट दीयो प्रह्लाद क
जानि अमर पद अंग दीया नीक से उडवो
डारयो प्रबुध ह्यो रूप निरसं १२ ग्रन का
यो बलि नूप जोत देवन दुख दीना नक्त
सुधारणा काज रूप वात न -
न आगुत्ता -

तपैडमैनापियोताकोगसौप्रनगमान
खग्रनकीपोलंकेशलंकसोनाकीपाई
कुनकरणसेबंधप्रोरसमदरसीपाईव
तारीलेगयोएमकी॥जिनछायोबडोगुमा
नलेसन्धारघुपतिचडे॥ताकेछिनमैह
रेप्रान॥१४॥ग्रनकीपोहणमानहातदुनागि
रल्यायो॥नरतहियामैबठिषचिप्रनुवा
एचलायो॥रामरामकहगिरपडा॥व्याकु

सौगर्तगुमान १५ कालिदेहमेनागवस
मनमैग्रन्थियो ताहापोहच्येकृष्णमुरारि
दोडकैसैनमुषआपोमुंमसुकाडिकृष्ण
पैजुवालाअगनिसमाननाथघालिशिर
परिचढेंताकोगासौगर्तगुमान १६ ग्रन्थ
कीपोदेवेसकृष्णनैजिगनुडापो जानिक
नकोगुवालघटालेबरसनआगे

कायन जो रि के छापोर ह्यौ अस मां न नष
पर गिर वर धारियो ता को गा ह्यो ग र न गुमां
न १७ असे असे बली ग र न जित को न ही
चाल्यो ता नै की यो गुमां न प्र र्त ता को दी न
घाल्यो ज सुष चाहो जीव को त जो ग र न को
साथ का न सु नी ना मा न हो पा आष्य देषी
बात १८ असो दुष की षां नि सषी आप न
मै आयो दी नां क ह्य गुमाय सुणे जा सु दुष

पायो सो करि पा सो नो नि पा ॥ द्वा र की सी
कू दो सा बो ल्या बा व त बा र ऐ फि र को क
रि का ट न रो स ॥ १ ॥ हो णी हो सो हु ई सु ण
अ ब क र ण का र्ज ज र म त न र म त फि र
रु ष म जी मि लि या ना ही म न मां ही धी र ज
ध रो क हु ब वि क रो बि स रां मा सो च रो स
सो मि ट त ना हां सो कु छ ली षी क ला म ॥ २ ॥
मो ड रा मा य ब जो य क ष कु र्न च न चा वे ज

मोहनमिलजायसुएरीआपागवोंतरव
रघेरदेमिकेसबनुविबैठीजाय रुसच
रणकोध्यानधरिसबागरजगुमानगुमा
य॥२॥ श्रीव्रजरजगुपालगोपकानाथक
हावो दासीसबदसपायकीपोसोअबतो
आवो मोरमुकटमुषबासरी॥ ईसोनदुजो
रूप आदरसणहसदीजीयो प्रचुतीनलो
ककीनूप॥२॥ दीनानाथंदयालदयाकेस

दधमाय बाहितुममोरिहमारी ॥ अनाघात
पतनेनसासहेमदेतीगारी ॥ केतेनद्यमश्रा
पकेहमनेसहेअकानि ॥ ऐकवारतमनास
हो ॥ हमरोनाथगुमान ॥ २५ ॥ सातचारनोती
न चतुरदसनाथकहावो ॥ त्रिपाकुंतरसा
यवोछपणकहादीयावो ॥ हमकछुवोरी
नाकरितासोदुषदीमलाय ॥ बीडदेरहो
अबआमिलो ॥ दीनुगर्जनवाय ॥ २६ ॥ सुणि

बड़ाई होत आपकी जुग के मांही ओगु
ए हमरे नाथ चितारो तुम मति नांही अब
तो आवो दर सद्यो छाडो हमरो दोसा गज
को तो ना चाहिये प्रनु कवल कली परो
सा २७ तुम तुम बीड दसमा लि अब मति दे
मि हमारी हम मुति ही नी नारि माफ करि
ओग ए सारी व्रज पति ई मुर आप हो सर
एगा त हम दी नाई न काम देव के घेरो प्रनु

पलपलतनकोछीन २५ सोसोसरण
आपजिनकोकष्टनिवासो तुमबिबना
अनाथकाजनाहमरोसारो गोपीना
थकहातहोनाववीडदतोरामि ओए
लमिआवोनही तोजातआपकीसांघि
ए स्यामरागुणघांनिस्यामसोसबसुषण
वैकारकष्टनिवारि कृतनसांचबतावे
कारछांटानेकसाहोतनेनमेनांहिरूपर

गदे सो बणी फतर ज्यो जुगमां हि ३ नंकार
 जर होय तेन को रूप सुधारो कारा सि
 परिके सहो व सब के मन जाया कारी बा
 कोयली बोलि तमं न हरषाया ३ नंकार
 तन रेख रूप गुण दोष दीषावै एक कार
 गहोई रोवता बाल हंसावै तुच्छ काला मै
 एषाण कोला करै सराय सब कारे तुम क
 जीहम को कर दुष पाया ३ नं नई न चर

१ जब छीनामे मर जावती

आयु जब तडिफत डीफ जीव जाय ३६ क
री नो तब रसायनाय तुम आनि हमारी ह
थालीयो न पाय बडो दुख अब के नारी वह
वीथा दरीया वके नही पालि नही पावतु
बत हेतु मर सीयो प्रभु ज्यो राख्यो गजर ज
३७ काम बडा बलवान सदा सिव व्याकु
ल की देखि मोहनी रूप लाज सब की तजि दी
नां ब्रह्मा की मन साडी गी ॥ चलि कन्या

कीलारुनकोडाटोनाडटोहमतोहे
अतिनाराधतुमबिननाथदपालओ
रनांसुफतकोईपडीचूककरिमाफना
थअबहममोईमारोताडोसरनेहेसुफ
तनाहीऔरकाफिसमदकीसुवटाप्रनु
जायकोनसीगोराइएवहअनिमाहा
इजिअपरबलदेकुजारातुमबीनप्रीम्हा
इजिअनिदुसकोननीवारेतुमराजन

मनसुसुमन्त्रापेपडोजसईनकुपावै॥ ह
रि हरि न्याकरि बिधचंद्रमांकरतकल
कीचाये॥ बीपतिपड्यासंगीतही॥ देतहेम
छिटकाय॥ ४४॥ हीसूधिरनहीमासहाड
जीतरहायेकोरा॥ रहोनेनआजीवन
नहीबोलनकोजोरा॥ मरबोधास्योगोपि
कानहीमीलनकीआस॥ कदमलताकुची॥
रकेप्रनुआयकीयोपरकास॥ ४५॥ मगपत

नीपतजायजुथकाजूचलीआवै। करक
रनुचाकांनतुरतगडीहोजावै। ज्युमोहन
कुदेधिकेघडीनइसबनारिननकोदुष
जैसै। योज्युरबीनाणाअधिकाराधरबी
नाणासोकवलघीलेज्योषिलसबअंगा। जो
रजुरतिज्योआयज्योतीज्युचीकटसंगा।
अतप्यासासरवरमीलेबाधीरजज्योआ
यमुजीकीपुजीगोया। मील्यजीसोसुषयाय।

निके आषाजडो पुष्पमेघवरसायनी
लमणिनके सनक नक जाला ज्योहीर
मुक्ताफल ज्योसं प्रसीस परचंदन फीर
बीच मैव ठेक छज्जीली पाणो पिका घेर अ
बटी लामति दी ज्यो नही ज्ञाप जाय पाणे
रिष वुक्त हेमहराजि जीसी को नुतर चा
वे न ज न ज न ज न ज जीसा जन को न कह
वै कत घनी वहोत है चावत को ना चापव

तामाहन आप हो दुजा को न बताय प म
तो असेनां हे न लाई तुम कहो प्यारी तुम
बीछयो मति जानि लर डोलत हो थारी
देखत हो तुम प्रीत को कसी है मो माहि जो
जीत जानु नही पाए तुम ते बतर नाहि ६ को
ईसन मुख बविक्रम सो न मी लावै कोई
हृत् रूप निहार हात सिपावै नाथ नाथ अवज
लत है करो हमारी साय नाथ पयोधर प

दरो ज्युं बीर अगनि वुजाय ॥ तुम राहीण
कठोर पावतौ कोमल मेरा जचरन ना
डिजाय कहो काहा बीर ततेरा हमका
रोन कोमल नये ॥ जक का जक ठोर अ
सी तो ना चाही ज्ये ॥ प्रनु अरज करं कर जो
र ॥ तुम दासी दुष पाये बीड दतो पोनाथा
को ॥ फुको अंग सब जात महर की नीज ला
जां को ॥ ओ गुण हमरे बीसरो हम चरण

कीदास घनबीनको नहुमे टहे चात्राता
पीयास ए! जानिक हवै जे बाल दया हरिम
न मेधारी नीक सो सकलगुमान क हस बपा
वतणारी परम नर्तिल लख दीनता सबणारी
मन नायरी त्यतिका प्रनु घेरसे गोपी लई ब
चाय १० सहस्र गज बलवान अंगन गानां जी
त्यो जावे लख चौरासी बुलिस कल कोनां चन
वे सो जीत्यो प्रनु मदन को पडो पाव

ताप गोपी मोहन घीत को नही ओड नही था
ये ११ नई सगन मत मां हि जो रिक रिअर ज
लगावे प्रथम रास आनंद जी सो नी ओरुचा
वे करण निधिर करण करी मुख घर बन
बजाई जसो प्रथम रास हो जसो लीयो वना
य १२ प्यारी स्याम निहारि स्याम को निरपत
प्यारी लटक मुकट मत मोहि मन नथ न
लकारी वापु लख डि आनंद को कर सकै न

एक का आनंद नयोपेक आ
या नही गुमाना १३ पूरब दीसा निहार कच
नयो कहो मुरारी दिन को होत नगान धा
तुम जावो प्यारी ब्रह्मा की रजनी नई छी
मातर ज्यो जानि तुम हम र कहा बर हो सो
नदी गोना न १४ इन चरन को संग न
तीत छे डाचावे जानत है महाराजिय
प्रफेर न पावे सदा सरबदा संग न

ममनोहरनेसा तुमबीनसुनोसावरेहम
नावेवजदेसा १५ अरजकरिकरिजोरि
सदा मेरणिपाथाहरो माफकरोदुषण
यापोआवेरीहारे पारीतुमसेदुरिनां
जबदेयो जबपास तुमसेतीव्रजमेवमु
तोल गधरैनआकास १६ बडेबडेमुनि
राजआपनांननचितमांही प्रेमनक्ति
मेवाधितचायो कपिकीनांही पीछेमेरे

लुण्णीय विनमुवादा १७ कोल
 बचनपरनामसकलमोहेनसेकीना हरि
 कीमरजीदेविधामकारसतालीना मुडि
 मुडिनिरयतकृष्णकुंपदपदमेमचलात
 मतईच्छापूरणजईबसीधामजुगसात
 १५ लीलारासप्रपारनहंकछुबनीजावे
 बालबुधिआपानमुडसोथाबन

अततापुननकोकोकरसकैवषानसेससा
सदोनीसरेहोवतनापरवान॥१॥ दीषत
दुरीवाताहिगोपिकाहरिकेमाही॥ जसेतर
वरमाहिदीषतीदुरीछाही॥ कक्षगोपिका
एकहेदीषतहेदोषअग॥ आणनीकुदीषि
जो जलसुजुदीतरंग॥ २०॥ विश्वमूलआधा
रकक्षवजराजकहावेगीतावेदपुरानमहां
नजनसकलबतावे॥ सातदीपनोषडमैनेन

बाहरिकोनाहि तीन लोक वोदत नवनबी
राटरूपकमाहि २१ येकचदयेक नानदीय
ताहोकाहाही फूलपातफलराडारमंदी
षतताही मुषआगेनाटिकवरैहोवतांताप
रमानानटातिकुजानेनही तोहरिगतिनीकि
सैजानि २२ हरिमायाबलवानजातनाकोसु
जानी प्रेमनक्तमैरहत रहत नावासुछानी
कहरकाकंचनकरैकरैचामत्तं २३

धनपुरका कोचाहतओतार। सबअंछा
पूरणकरी। प्रनुवजमंडलदे। शिरध
जसमंतिधनितदा। रुझजीतगोदमिल
ये। धनिबछाधनिगाय। रुझजिनयासच
एये। धनिधनिसबवजीदेसको। धनगो
धनगुल। धनिहदावनधाने। ताह
लाकरीगोपालरु। वंदावनरजनी
अथाकाहामहावे। सुरपुरलबत

धन्यजोवहादेपावे जपतपज्ञवरदान
दावनदेपायापापीकूरमिगतिमी
ले जजनममरणहोजायोशून्यनूपतसु
तिदानकरेकचनगजराजा व्रतकर
जिणकरेकनीसुमरथकाजामानदान
नूदनकरि करतमासअसनांनई
लवेनालगोबुदावनकेखानाअनरुल
वकोधायगोपिकाजकोध्यावेह

अथ रसंद को रासालेखते ॥ रसंद की पुन्यो
मदाई रासकी मोहन मन आई ॥ वजाई वसी
दलाल बुल्य वत सब व्रज की बाला ॥ वन सुन
आई तत काला तो दफा धंधन का छाला
कोई अंजन सुंदरी सा सौं ये कही नन की सके
हाथ वीर जत धरण हत भवली पारन ला
ज सब कूल की छट काई ॥ नीहारी मोहन
आती प्रेम संग हो रासव माती ॥ मुरत नाकमा

तनवाती॥ कसु कुंदरसन कुचाती॥ आनति
लेजबसाव रेवै लेमन मुसकानारी धमकिं
थकी सेवा गावत जेत पुरन रनवन कसंतु
मध्याई॥ २॥ सकल सुन सोच कसौ मन मै
छाड घर आई गईवन मै कसतु म आई क
ह्य मन मै छुड़ाये घर के पारुवन मै धान पान स
ब मीसरी वीसरी कुल की लाज का मकाज सव
घर को वीसरी सुनतावन आवाज आपया
कहसी चीत धारी॥ ३॥ आप सुन वोले अव

धार्मिक

संस्कृत

में

क

नासाधीयारीमतो करसीसचकातमरेम
यासीआनिवाहैपुरतवासीकोलकीयोछो
यादीनमो... रक्ष... आयतुमतावोलना
हीमतो... नी... तलईदुल्लायक
रोतुमह... नी... अनगोपीसीनगा
रीअधिकवनवासनरानीरतकरमोहन
सगण्णसी... कहका... नंदकनारीमानवान
सवगोपी... लई... सवकुं... अइरई

वानवनमैलईआपसंगवीथावासवक
तनछाई॥५॥गरनकरवाकुनीत्यागीपी
छलीचरणसंगलागी॥डुडतीप्यारीपगा
ईसुनावसुनमोहनकोजागीरंछमकुपूछ
तफेरकहुदेवेनंदलाल॥सोलीलामह
रजहसनेकीसोकीतीव्रजबालनीरने
नतऊडल्याई॥रसदीपुन्योसुषदाई॥र
समोहनमतआई॥कारणकरजाकीआ

दानीवीथाहरगोपीनलीनी॥ वीथास
डीकुदीनीआरतीसवमीलकीनी॥ न
सौगोवंदयेकडीगहेया॥ सुर्यतीव्री
मोहे॥ येसदासोवमोयः ननकमुरली
नपाई॥ ७॥ मनोरथपूर्णकरदीयोमास
दयामदीयो॥ गोपीकाकहासुरनकीये
नहुकमीकरदीयो॥ वोएनईजबगोप
गईआपकधाम॥ गंगाधरसबमंगलद

गोपीकानावन्मंगलकोटीनमीटाजई
रसदकीपुन्योसुषदाई॥रसकीमोहनआई
अथरसदकोरससंपूर्ण॥श्री श्री
अथगीरजलीलालिख्यते॥रुसनहमसर
णाततेरीबीजआईद्वनगोरी॥छडेदेखोव
शदलआवैधामनीधमकतवहल्यावै॥मेग
पुरलेखावरसावै॥वाजअवकहोकीतआ
कहाजीअवकहसकरफडोइंद्रसुवैर

कोपेसव प्रीथी कोपालक की सवी
हराकतन कीजेतावेरी ॥१॥ एस्तः
तुम तद्वसमानि जेट गीरवर्वा मत
इकी कुटी सब जानी लिमत अब तुम
नीमोकल राजानंद जू जीन के क
वायमी प्याव चन होत तुम रैता
नुपाय जुगत हम नोतरा हेरी ॥२॥
कह का तुम रे गुणवारी पुतना वा

मारी॥दुर्गतीमायावीसतारीआश्वतसं
रसीनारी॥वीप्रकेअचलअंगलेदीये
आपमुखमाही॥ऐकमासकोरुपतीहारो
जीवतछोटीनाहीमारकमारामेंगैरी॥
नीरामलजलजमनाकोकीयोप्रचकरदा
वलयी॥योहन्तव्रीजवासवकुंदीयो॥
दकहाव्रीजसमनलीयोवीरजतीहार
सजिइंद्रकरपमालअवसह्ययकरोवी

जराजाकरुनासधामोपालअसतुमवृजपा
नदेरी॥४॥ आपसुनत्राधुंभुंकायेवचन
योमुषंफुरमाये॥ कहो नीर सिंहमपेकोआ
येसंगलोगीरवरपधमगे॥ सपरपीएवर
धारीयोकीयोहसलैअगोर॥ नकासीसपे
अनुदीयोचकनसेलहधुंभुंमीनेटेरी॥५॥
रोवतसीरपचराचि॥ नरेच॥ पानकावी
।मालादीमोकगाए॥ रीरा दि॥

मरपीराकोससातकावीचमैगोवरधरव
तारवरससातकोरुपपदसोन्हीपुष्पज्यु
असीसाव्रीजधुनीगैरी॥६॥व्रीजजीनअ
दमैहरसःइंद्रतोकोपकोपवरसन्हीजल
रवरपरसवरसतवरसतहारीजगज
जगदीसदोनहाथमीलाकरइंद्रधस्यौ
रणमैसीसबुधमहेरीमायानफैरी॥७॥
अंचतोयाकोकबुइंद्रतोलाधकोटी

ई॥ वनावत जुगदु पुन माही त आनत बेर क
 झुनाही॥ नन पतले संसार की नीर धारी गो
 व्योम धर नीर सा रसो व भ्रां वे को न धी चारो
 छुदना वन ती म बेर सा क स न ह स न राण
 गत तेरी॥ ब्रज व दंड न गोरी॥ वा सा श्री॥
 अथ बांरा सा सा ता ठ र म ह वा॥ मा सा मो ले
 ध्यते॥ दे प्र ध्या न धु न सु न मे री न प्र व न ज व
 जानु न व सो व र ताः ही र दा री च व सो छे ॥

नीसदीनटोटसलकीरोधानीः वूलचूकमे
हरीमाफकरोकरपकडुकीनीरवा नीः कवर
लीलावरनीयेकहरफेमतीरमछानीः पूछू
येकहकीतअमाश्वीमूजकुवडाअचवाः मा
मनकेमीसघरघरफेरेताः लूटतनारगोकल
कीअसीगुजरमसतानीः घटीपुकारपोलमह
लपरदेदेतालीमसतानीधेदेमजसोअगयाग ।
लकीक्याहाकहुतोसुनीदरानीः कवरक्रस

कंवरकानकेकरमनीगोडेमुखपर
चीकसानीटुकटुकमेरीआयाक
चदछातीपरगुलचनमारी:नोली
गलीछुदावनतोदीनुतनहीमानी
नकाचाटफजीतीनीकलजायगीज
नीजसुनपातीसासननदीयाजाकं
राजवसीकाती॥मेराकंथावटाजी
वलीहालेकरथुनीआसीकरता

॥ मुनकरमातजसोधावोलीदेषुरीतै
याचोलीवावालकतुजरीजवानी ॥ म
पचीकबमानी ॥ मुषवोलीदेषजसो
हुतोमुनीदरनीकस्त

रषडेनंदलीलामुरलीयोसिपीतामरच्छटकी
तोटलईगलवमालामुषसुवोलीदेवजसोभा
काकहुतोसुनीदरानीवडेघरुपलमलगाती
गयेघरुकीमसतानी॥२॥चतमहीनागुलरंग
बीनाहीलमिलनीकसीव्रजतारीसीसफल
मुषचंदवीराजजुलफोनागनवलपारोनर
नीबरनीमीरगावरनीबरजोबनमेनुद्यमाती॥
उमगाजोवनदुटतानाईविनामहावतकह

एक कथा रयात कती टोल बरद लागेना
षडी नना राखान विरका पल्लु रुत रवार
जडी मुख सुवेली देस जसोधा का कहु तो सुन
दरानी दरानी कवर कस्त कुपल मलाती नु
गुजर दारुन रुता नी ॥ आवसा प्रसाध करी
पाक दीनी मालिक ते नह घर मे राये नद्य मा
धे छलवा रज के नी तनु ड करतै पूर फीर दे
प्रन्न कल कुजन वन मे प्राये रत्र साडी द

प्रपातहीमानः हतधरसुधारसलीयामे
यलोतेतीलाजनआतीआतीजाती
देजालाजोदेप्रजोषोचावैकबछोडेते
पनंदलालामुषसोवोलीदेप्रजसोधा
काकहुसोमुनीदराणीवडेघरुपलम
लगातो॥येघरुकीमसतानी॥४॥जे
ठनेटकुलकाननेटकरसेजपरया ॥१॥
आनषडीः गोरेबदनपरजरादरसन

॥ कासदेवलीपापोजघडीफीरघुमत
धकीमातीतेरीबेदनहाथनआतीज
सीसेवडाबेदबुलातीसेसतागकीलर
डीरुपदेपनोनडवाझेकामीलडेवा
यडीमुमसुबोलीदेवजसोधाकाक
तोसुनीदरातीवडेघरुकुपलमला
तुगुजदारीमसतानी॥पा॥सावगाट
रघडावाडलेलटनैकूगोरीआनम

वाला दस जसा धाका कहुता सुना दसना वद
धरु कूपल मलगाती गये धरु की मसताती
॥५॥ नर ना दुजा दुजुग जानी पीरती करी
कर कै पीछताती चंद्र बदन सी घर त रेखी
जनंद पर तरया ने रे म न मानी घर की ओ
टी दास चीरु जुग ये वाचने गुड धानी दासी
की तुम करो घवासी वीर ज के लोक रे तेरी ३
हासी ॥ जा दु कुल के सब को ई ॥ वेद रदीनी

नंदकेतुमसीरसेओरनाहाकोई॥वाल
जीवनतुमेगलुटाद्यादीयेपारेःजरेजुवानी
चरुस्तनवटाभानमारेजी॥मुष्मुखो
लीदिषजसोधाकाकहुतोसुनीदरानी॥वटे
धुरुकुपलमलगातीतुगुजरदारीमसतानी
॥६॥आसोजमोजरखरोजरोजनगरमगुण
एकरतीव्रीजनारी॥करीसोलासीएगा
कामनीचलीतोतनेब्रह्मचारीः

लचरणप्रतलीनुकेसरतीलकगुरनक
कीनाअरुजमुनोमेरीवासाव्रजतीधनी
जीमुखमुनहीवोलीद्विजसोधाकाकहु
मुनीदसतीःकवररुसकुपचमल्याती
गुजरदारीमसतानी॥ए॥कातीपामस
वडतपनारीःतीरनीपरनीअषडक
वारी॥येकमहीनासकलपकीनाजो॥
जोगमुखसारीकापाचदीनापचनीकन

केदीनपलानछीवनरीकादीपध्यान
ठाकुरकीसेवाःफीरपुजतीमाएपतदे
वा॥हीरदवसोनीरंजनदेवाधरोभा
नगीरनारीकाधरवठावीरजनीदजी
मिलातावचनफलवीरमचारीकामुष
वोलीदेशजसोधाकराकहुतोसुनीदरा
नीवटेघरुकुषलमलातीगायेघरुकी
मसतानी॥१॥दसवामासलाफामा॥

लचरणप्रतलीनुकेसरतीलकगुरनक
कीनाअरजसुनोमेरीवासाव्रजतीधनीध
जीमुखसुनहीवोलीद्विषजसोधाव्यकहुतो
सुनीदसतीःकवरदृष्टकुपयप्रस्थाती
गुजरदारीमसताती॥ए॥कातप्रासास
वडतपनारीःतीरनीपरनीअषडक
वारी॥येकमहीनासकलयकीनाजो॥
नो॥मुखसारीकापाचदीनापचनीकन

केदीनपलानहीवनरीकादीपध्या
ठाकुरकीसेवाःफीरपुजतीनाएप
वा॥हीरदवसोनीरंजनदेवाधरो
नागीरनारीकाघरवतावीरजनीदज
मिलातावचनफलवीरमचारीकामु
वोलीदेवजसोधाकराकहुतोसुनीद
नीकटेघरुकुमलमलातीगयेघरुक
मसतानी॥१०॥दसवामासलाफामा

सीरका सोच कीया वीर जना रीष डी उ
धोजी गो कलम आये ॥ जीन के काना
नत कप कडीः अपते अपते नीक सवा
र सुत ठठ ठठ डी वीर जवालाः पूछत येम
कुमलयतने की कबघरै नंद लाला पत
री घोल रुस की वाची मानहुई जव अ
बलाना ची अवतो हम कुयाद करीः सा
त वृंद जव पडे धरन पर सु की वाडी हो

पहरी॥ नुधोजीना॥ डीमोली॥ दीयेहाथमट
टाजोलीपहरकातकीमलमालाः सीगीसेली
काननमुद॥ सीरपरवोटोमीरगछालाः मु
मसोवोलीदेखजसोधाकाकहुतोसुनंदरानीक
वस्तुनकुपलमलगातीतुगुजरदारीमसतानी
१॥ पोसरोसमनमोसधुवोगनबजाकधरमा
हीः सुनीसेजासलावरखरकीनकेधाला
मलवाई॥ सीसीकरतीधरमेफीरतीः तन

जाई मेर वर सत की तुम तो वन रये फुल
कवल के हम कलीया सुर दर सत की राधा
रुक्मणी ले नुज बल के कंचन मपुष एज दी
वीछ डैमी तरमी ले आत कधन टोट रम
ल आ जी घड़ी : वा रा मा सी ब ए रई का सी
एषी चरण कवल की दासी : एषी तुमारी
षवासी : नीत नुठ दर सन करु रुक्मिका
नही लष जानु चौ रा सी मा ॥ एषी मुष सी

तत्

बोली देख जसो धाका कहु तो सुनी दएनी
कवर रुत कुपल मलगाती गये घरु की म
सताती ॥ इति श्री टोटर मल को वारामा
स्यो संपूर्ण ॥ श्री श्री श्री
॥ अथ दान लीला लिख्यते ॥ दान की लीला
कहु सारीः कीरणा रुकी सुलगा प्यारीः
गुदालन दध बेदन चाली कम धम होर
मतवालीः मिले दोऊ माखन माली मोह

नीबंसीकीटालीःरुसकहसुनागोपीका
दोहमारोदानमानकह्यहटछाटरंगली
आगेदुनहीजानकहतयोमुखसुगीरधा
रीदंनकीलीलाकहुसारीकीरपागुरुकी
मुलाप्यारी॥१॥ततपरजाततहीगाण
कह्याकाहुकानहीमानुनंदधरकसोमस
तानुनुकोवसतोनाजानुमारोकोरुस
तजीयेकहाकीअनुरीतनोलयधननंद

घर दुज कहसी राधो नीत चलत लानी आ
 गावु जनारी दावक लीला कहसा ली कीर
 पागुरु का मुलाप्यारी ॥ राकमट की दुख
 छीन ली नीदा या कहु मन मैना का नी ॥ ह
 की मुरतरा नीने ॥ अधाडी जान नही दा
 नी ॥ वज्र चोरा सी को समला ॥ हमरो देना
 तुम अरु मध की मतवारी कहय हमारा
 जान ॥ ॥ ओमे तुम प्यारी ॥ दात का नी

नाजमेरीसारीसोडारी॥दानकीलीलाकहु
सारी॥कीरपागुरुकीसुलगाणारी॥वनसुन
वौलीतनंदराणीसकीतुमरवतनाछानी॥ला
मप्रईयेकनहीमानी॥कसतमेएवालकतुम
जुवानी॥घरछानेघुमतिफीरोतुमहोसववी
रजकीतारी॥गुलचादेदेकसनलनावतह
मसुकरतमुकारा॥सकीनसुणहोगईलाचा॥८
री॥दानकीलीलाकहुसारीकीरपागुरुकी

रणागुरुकीसुलभाधारी॥पुष्पाभाजनापोधर
तेगीरनारी॥वेदगुणमावतनीसतारी शनम
थीवीरजकीनारी॥मामाघप्रधायोगीरभारी
माघतमोहनलीलात्मसादकीपटमदनीतन
घाटोटरमलजामापुरनदीजानतातमज
फलपाया॥समनरमावकीचनयासी॥की
दानकीलीलाकहुमारी॥कीरमामरुनीम
माप्यारी॥१०॥२॥निश्रीदाननीनमामुपु॥श्री

नाजमेरीसारीछोडारी॥दानकीलीलाकहु
सारी॥कीरपागुरुकीसुलाग्यारी॥वनसुन
वोलीतनंदराणीसकीतुमरवतनाछानी॥ला
ममईयेकनहीमानी॥रुसनमेरवालकतुम
जुवानी॥घरछामेघुमतिफीरोतुमहोसववी
रजकीनारी॥गुलचादेदेरुसनलजावतह
मसुकरतमुकारा॥सकीनसुणहोगईलाचा॥६
री॥दानकीलीलाकहुसारीकीरपागुरुकी

रणगुरुकीसुलगावारी॥ए॥ध्यानजाणोधर
 तेगीरनारी॥वेदगुनगावतवीसतारीःधनजो
 थीवीरजकीनारी॥मा॥धधधधयोगीरधारी
 माधनमोहनलीलाकृसनकीपटमुनचीतला
 प्र॥टोटरमलजमपुरनहीजायतमनवंचन
 फलपाया॥कृसनचरणकीवलयारी॥कीर
 दानकीलीलाकहुसारी॥कीर॥गुरुकीसुल
 गावारी॥१७॥इतिश्रीदानलीलसंपूर्ण॥श्री॥

अथनागालीलालिष्यंते॥वसतहोजमनामैका
लीनाथकरल्यायेवनमाली॥चरावनानुन
कुभ्यायेचलतहीकालीधहआये॥गोपीजल
पीयेअरणायेपीतहीसवहीमुरजामेपीछेसैआ
रुसनजीसवकुलीयेजीवाय॥नीरमलआजि
करुपटराणीछटेकधमपरआय॥गीरतही
जमुनाजुहली॥वसतहोजमुनामकाली॥
नाथकरल्यायेवनमाली॥१॥पोहचयाना

गानक आगौना गते रा सो व डक जागौ ॥ लुधो
कुकी एरो न पला गुध हम आये न न आगौ
यो मन मै गर न्यो घुणा काटु जमना बारा ॥ ना
गान सुनत असत न ही मन मै बुध को ना ही वी
चार जगावत न रता कुचाली ॥ वसत ह्ये जम
ना मै काली ॥ नाथ कर ल्या ये वन माली ॥ रा
नाग सुना गन युवो ली डी डये क वाल कया
पोली ॥ पलक जब काली न घोली ल

येवनमाली॥५॥जोडकरना॥नकवायक
नाथतुमदुसटननपदायकब्रीडदयोदीन
कोसायकोआपयोनाईवहलायकतुमकर
तासंसारैहमज्यूतमैंनाजाचुदीनजातक
नारीवकस्योमोहसुवा॥सरणअबतुमर
हमआली॥वसतहोजमनांमकाली॥नाथ
करल्यायेवनमाली॥६॥दयाजबना॥क
धारी॥सरवसुषकंथनमैंनारीतजोहकर

एकराणीथारी॥वीथाकरकालीकीसार
वीसहोजलकसरहैयाहमआतहमेसत्र
बतुमनयो॥रुडोकोनाहीजावोअपणे
सकरोयाजमानामकाली॥वसतहोजम
नामकाली॥नाथकरल्यायेवनमाली॥३॥
पुंजहरकालीसुप्रआयोदोसकाअसोत
पायो॥कुटवलेअपणेघरध्यायोआण
लवजजीनसुप्रपायो॥पीरदावानलपा

करदीनीव्रजआनंद॥ गंगाधनीरबहोका
लीकरकीरपागोव्यंदगायो नयकरपाजी
नपाली॥ वसहोजमनामैं नाथकरल्यायेव
नमाली॥ इतिश्रीनागलीलासंपूर्ण॥ श्री॥
अथचीरलीलालिख्यते॥ कृष्णनुडजमा
नास्रंटाप्येचीरकदमनपाध्याये॥ गोपी
काबाहरसबकमनआई पीरसुधघर ॥
कीवल्यआईजावतदेखीगोपीकाबोलेकस

नमुणररनसमतुमषावटकोगीवचनसु
नोय्युनारगोपीकामनमैजहल्याये॥कस
ननुडजमनामैतटआये॥चीरलेकदमन
पध्याये॥१॥धमाधमजमनामटाकीकाडसी
रकदमनकुजाकी॥मुकडमलअणेतनछा
कीलाजकुषोवतहमाही॥चीरहमारौदी
जियेवोलीसबत्रजवालउद्यमवोहोतसहये
हतुमरैपाकाईल्यायेचालवचनसुनमोहन

आनंदनु रचाये॥ कृष्णनु डजमना तट आये॥
चीरले कदमन पचाये॥ ३॥ कदम सकृष्णनु त
रचालेः वचन सवागोपी न के पाले॥ सरद की
पुनू आकाले कामना पुरी ब्रजवाले धनध
सवागोपी कारमी कृष्ण की सात॥ गंगा धरव
रन वपावे सहस सहस मुषगात नाव सुमुकत
पक्षी पाये॥ कृष्णनु डजमना तट आये॥ चीर
ले कदमन पचाये॥ ८॥ इति श्री चीरलीला

संपूर्ण॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥
॥ अथ ब्रह्मरूपलीला लिख्यते ॥ गुरुवर्य
रामाको॥ सोपावपी सतायो हास्यो॥ ये कद
नुबच्छरतकुलीना॥ गवननुडबनमाहीक
नावाछराचरणछोटदीनाः आपमनजो
तकाकीता॥ जो जनपावत हस्तजीले गुवा
लकुपासा॥ घाटोमीष्टकोतकोदेखा॥ ये कये
हौं ग्रासवचनयुमुखसुनचाह्यो॥ गुरुवर्य

धरकरध्यानजानायेमनमयेब्रह्माकेक
गतसबनुनकोवीसतासो॥रनहरब्रह्म
गात्रो॥पावपडपीसतायोहासो॥४॥वन
जसाकेतहसैजरतकोकापररंगपसेरग
टीकासीरकसे॥गवनसेबछरामीलो॥म
गोपीकागुवालनुमणोयेमऔरहीनव
देखआपनबालकाजगनुगोपीनकोसा
गरनहरब्रह्माकोगात्रो॥पावपडपीसत

हातौ॥५॥ चोरहीवनमलेजावै। सारुकुलुटे
घरल्यावै गुवालमाता सुवतलावै॥ याददोव
रसनकील्यावै। आतजातकीडाकरवीतोस
मतयेका। माया सुवायः आपब्रह्माजीः कसमं
उलीदेख कणोतब कमलासन नासौ॥ पार
नहरब्रह्माको नासौ पावपडपी सतयो हासौ
॥ सोचतब ब्रह्मा कुलभाषो देववा अपने घर
भाषो॥ मानहम ब्रह्मा पणता ग्यो ते जतो मुख

धरकर ध्यान जानाये मनमये ब्रह्मा के काम ज
गत सब नुन को वीसता सो ॥ रत्न हर ब्रह्मा को
गात्रो ॥ पाव पड पीसता पोहात्रो ॥ ४ ॥ वनाये
जसा के तह सैं जरत को कापर रंग से रगत
टी का सीर के से ॥ गवन से बछरामी लो ॥ मी ले
गोपी का गुवाल नुम गोप्रे म और ही न वाद
देख आपन बाल का जगनु गोपीन को सार
गरन हर ब्रह्मा को गात्रो ॥ पाव पड पीसता

हास्यौ॥ पा॥ वो रहीवनमले जावै साऊकुलुटे
घरल्यावै गुनालमाता सुवतलावै॥ याद दोव
रसन की लावै॥ आत जात की डाकरवी तोस
मतये का माया सुवायः आप ब्रह्माजीः कल्पमं
उली देख कपोत बक मलासन नास्यौ॥ पार
नहर ब्रह्मा को गास्यौ पाव पडपी सतये -
॥ सोचत ब्रह्मा कुल॥ ॥
नाम्यौ॥ माः हम ब्रह्मा पण ताग्यौ तेज

कोसबनापौ आपसमालीवी रजयाली
लाअपरमैनुपपजीतनागुवालबखड़ाजी
ततादेप्रचतुस्नुजुरुपसकलमुषब्रह्माईक
नासो॥॥॥रनहरब्रह्माकोगासो॥पावेपउमीर
तायोहासो॥३॥देखयावीरमामतटरीयोका
देखयामेरेचीतफीरयोःगुवाललेबछरापद
परीयोःताथमोयेचुकमाफकरीयोःअगपाले
ब्रह्माकोगयोसतलोकमाही॥॥॥गंधरब्रह्मा

कोजीनुकुगरनसुवायोन्नाय॥गरनह
रमाकोहासो॥पावपडपीसतायोहासो॥
श्रीनन्दहरणलीलासंपूर्ण॥श्री॥
अथाजोडमुषलीलालिख्यते॥गारागाज
गलीनुवरचीतपूर्वलोकीनुसमऊगाजहर
रणलीतोदीनहोलीलाफेरदीनोअबमेरो
नोजनकरैपूर्वदीनोसरफअसोजबरहीन
मनमतोसुनकोतबीनआपनहीयोतुमसे

सेतीटरताअरजमेरीसुनहोजाकरता
 सरणतुमरीबहहरता॥१॥सुनीहरकु
 रकीटेरी॥सुनतहीनुतवाबेरी॥फटम
 चनुवोरनफेरी॥तुरजनदीतनकेनेरी
 गुरुडआदीकरआईयो॥आपेआपव
 राजजीतनोबेगीतीहारोजीतनोहमदी
 वोआजि॥बचनयोमुखसुवचरता॥अ
 जमेरीसुनहोजाकरता॥सरणमतमरी

हरता॥२॥ गुरुदमन आनंद अत आयो॥ ब
चन युजल दी फुरगायो॥ घात बल जीतनु क
र भायो॥ वे॥ मन दस दस गुण भायो॥ चाले
जब पंथन हली च॥ गुरन कसी तास॥ नुबले
फाडनो म सुतर व रे फे रता फीर अकास
नौ मुल्या मुका धल फीरता॥ अरु मेरी सु
न हो जगता॥ सरण मनु मरी नय हरता॥ ३॥
चन हर असन नासा गुरुद को धी मे

रसकरतातजमठरता॥ अरजमेरीसुणहो
जगकरता॥ सरणमतुमरीनयहरता॥ ६॥
पारसतनबमारगआयेविमाणजितवटनकु
ट्याये॥ हीरमणमुकताछबिछाये॥ दुकमह
रकीनोबटायो॥ देवसंगदेवागनासोनाअप
रमपार॥ अजबिजदोनकीपोलियामिलेता
थदुवारसरणकीअसीजब्ररता॥ अरजमे
रीसुनहोजगकरता॥ सारणमतुमरीनयह

एता॥३॥जोगजासाधनताकीनी॥सर
 रुदुषकबसलीनीलदीनलभकरणा
 नीश्रधिकातजोगनसुदीनी॥मुक्तव
 नाकीयेकतावकजापा॥गंगाधरदस
 हीतकुचरणनयोडेआपवजतनरवा
 एता॥अरजमेरीमुणहोजगकरता॥स
 तमरीजयहरता॥५॥ श्री॥

माधोजीधारीगतः अपरमपारः प्रथमजल
नरेनोमनारीसेस परपोडेगीरधारीः ताह
कोनुन्हीधानरनारीः प्रनुतुमथरेमछअव
तारः॥१॥ नयोचतुरानैतवमचारीः नुननप
यान्हीपारीः सकलकरमायावीसतारीः प्र
नुतुमधसौकछअवतारः॥ माधोजीधारी
गतः अपरमपारः॥२॥ नयोपेकराक्षसमाह
नारीः नुननपयान्हीपारीः सकलकरमाया

वीसतारी॥ प्रनुप्रध्वीलीनीडापधारी॥ माध
जीथारी॥ तत्रपरमपारा॥ शानयोहीरण्ण
अधकारी॥ दीयोदुषप्रलादकुन्तारी॥ ह
प्रलीयेषुगवडेनारी॥ प्रनुनुमप्रगडेनी
संघषमपाडा॥ प्रनुनुमप्रगडेवावनओव
अवतारी॥ माधोजीथारी॥ तत्रपरमपा
पा॥ त्रसद्वत्रीप्रथमीकरलीनीःधरमक
परकुदीनीपीताकीआणन

माधोजीधारी गतः अपरमपार ॥ प्रथमजल
नरे नो मन्तारी से स परपोडे गीरधारी ताह
को नुन्ही धानर नारी प्रनु तुम थरे मछ अब
तार ॥ १ ॥ नयो चतुरा नै नवमचारी नुननप
यान्ही पारी सकल करमाया वीसतारी प्र
नु तुम धरौ कछ अवतार ॥ माधोजीधारी
गत अपरमपार ॥ २ ॥ नयो रे करानु समाह
नारी नुननप यान्ही पारी सकल करमाया

ए

वीसतारी॥ प्रनुप्रव्वीलीनीडापंधारी॥ माधो
जीथारी॥ तत्रपरमपारा॥ शानयोहीरण्णु
सञ्जवकारी॥ दीयोदुषप्रलादकुनारी॥ ह
यलीयेषट्ठावडेनारी॥ प्रनुतुमप्रगडेनी
संघषमपाडा॥ प्रनुतुमप्रगडेवावनओव
गत्रवतारी॥ माधोजीथारी॥ तत्रपरमपा
॥ पा॥ नासहत्रीप्रथमीकरलीनीःधरमक
वीपरकुदीनीगी

अथनागककोलिषते॥गोरीनंदगणेशको
धरुहीयामैश्वरानदुरगादेवीसुरसतीवर
माणुसुप्रपात॥ककाकसतदयालकीली
लाअपरमपारसेसससमुषचतुरननवर
एतवरएतहार॥१॥षष्ठासेलतगुवाल
संगगंदध्यालगीपालगुडतोजापड्योजम
नामैततकाल॥२॥गंगागुवालायोकहीवि
गडयोहरध्याल॥जोजाल्यावोगंदकुतोजा

१००

नंदलाल॥३॥घघाघरकह्ज्योमतिमजाउ
देहकमाही॥सोपानवावानंदकीरीतोआ
नुनाय॥४॥ननानीरखतगुवालसंगछडेस
दमपरजाय॥नटज्योममठकोरकपडतनी
रथराय॥५॥चचाचालेकसजीफाडतफा
डतनीरा॥जाहपोननुडावतनागानीसोव
तनागनुमीरा॥६॥छाछाछलअनोकेकस
नजी॥नागननीरखलुनायहारदोरदोरव

अथनागककोलिषते॥गोरीनंदगणेशको
धरुहीयामैश्वरानदुरगादेवीसुरसतीवर
माणुसुप्रमाण॥ककाकसतदयालकीली
लाअपरमपारसेसससमुषचतुरननवर
एतवरएतहार॥१॥षषासेलतगुवाल
संगगंदध्यालगोपालगुडतोजापड्योजम
नामैततकाल॥२॥गंगागुवालायोकहीवि
गडयोहरध्याल॥जोजाल्यावोगंदकुतोजा

रहकमाही॥ सोनवाचानंदकीरीशोभा
उनाया॥ धाननानीरथतगुवालसंगछडेक
दमपरजाया॥ नटज्योषमठकोरकपडतनी
रथराया॥ पाचचाचालेकसजीफाडतफा
डतनीरा॥ जाहपोननुडावतना
तनागुमीरा॥ धाछाछाछल
वजी॥ तागननीरथलुनाय

न कोलेवाल कधर जाय ॥९॥ ज जा ज व यो
वोले कसन जी हार टोर त ही चाय ॥ म स्ता
ल्यु थारा पीव को ना गत बे ग ज ग थ ॥८॥ ::
ऊ ऊ जु ड ज वो ल ह ते र का ल र ह यो सी र
गा ज ॥ ना गा ज सु तो नी म जा गत ज सी वा ज
ए ॥ न न ना ना गत व र ज यो वी द वी द सु स म
जा य ॥ दर्श ता फ जा ना ग क सु तो ली यो ज
गा य ॥ १० ॥ ट टा टे क ज ना थ जी दी यो का

लसी रहा था। सरपड बुझी जोर कर चली
कसन की सात। १॥ ठग ठग डे कसन जी
काली आवत जाना मुबसुका डी कसन
पा। जुवाला आसमान। २॥ नन टरमा
नो नही ईसरत मुबवर साया। आन बुझा
ई पलक मकाली गरनत वाया। ३॥ टटा
टयो ना। जव अणमन रुसाही। छो
रोवालक गुनवडो कह जते।

एणरणकालीमच्योमलीईकोनसुवे
सीसनुडालराचल्योदर्इहसनचरणेड
१५॥ततातवकालीलोपड्यो॥लईअव
लनुपाया॥नागसकलपड्योहसनचरण
पुछसीरल्याया॥१६॥थथाधरहरकाप
धरतरीनंदगावमैजाया॥नरवावातर
जीवनासुगाननईदुखजाया॥१७॥ददध
डानारजवनंदजसोधामाया॥लालाल

नाकरतहपडतपुरछायाया॥१८॥
 जनाधरजलजमनाकीतीरा॥नर
 ।वहवकतेजरनीरसुनीरा॥१९॥
 जनुडायोपुछीगुवालबुलाया॥
 हैमहाधीनहोयडोकदमजलज
 पाप्रनुजातायेमेरेमातपितासु
 ।नीदेहनदध्यकहरकालीदीयोव
 ॥फफासीरफणपछडेनाथघाह

जशया॥ जलजमनाकुचीरकैदरसनदीनो
आया॥ २२॥ बवाबवानंदकहरकजसोधा
माया॥ वीरजवासीनुडेसकलदीपोप्राणदे
आया॥ २३॥ ननानलोनाचफणपकरैरीम
जीमपावैनुडाय॥ देवअकेलीहसतकुसुमां
धरदीयेफडाय॥ २४॥ ममामुममुरलीबजे
देवपोपबरसाया॥ वीजवासीकुरआरती
तडजमनाकीतीरआया॥ २५॥ यायायाया

वीदनीरतकरवीजवासीवललेता॥ जोप
नुटनागकोजाकटोकरदेता॥ २६॥ रररका
नागकपडनाकमुषमाही॥ लडवाचाल्यो
रकरजीवतछोडताप॥ २७॥ ललालापो
गदुषनागनकरतफुकारा॥ पीतबीतक्षीव
असतरीप्रनुमागोदपसार॥ २८॥ वावा
कोवुकहरजातागनलेजाया॥ नागनाग
वालसबजावोदेससीदाया॥ २९॥ ससासव

जानेनागनमकरीकोणपरीसा॥ रतनऊ
डाबोहरालचंदनरच्योसीस॥ ३७॥ मध्या
धुसीहोरकालीचल्योचरनासीसनवाया
कसरुपहीरदधसोहनैरुपघरजाय॥ ३८॥
ससासबसुआमिलैनरनारीमावावागंद
गुडाई॥ सगनपचलेगावकुआय॥ ३९॥
हाहाहरकसवव्रीजमघोगावमालाचा
रत्नरत्नरमोतीथालमवाडतडोलनारी

३३॥ यथा पुसीजनंदकी बीदनाय
वसाना॥ नृप्रमोक्षिकघोषकी कर
नकुदाना॥ ३४॥ नीतप्रीतवाचजोस
चीतप्रीतसहेता॥ गाथाधरजीहीनजी
नहीना॥ दुषदेता॥ इति श्रीनागकक
पूणि॥

जानेनागानमकरीकोणपरीसा॥रतनऊ
डावोहरगलचंदनरच्योसीसा॥३७॥मषा
मुसीहोरकालीचल्योचरनासीसनवाया
कसरुपहीरदधस्तोहनेरुपघरजाया॥३८॥
ससासबमुआमिलैनरनारीमावावांद
गुडाई॥सगानपचलेगावकुआया॥३९॥
हाहाहरकसवव्रीजमयोगावमालाचा १७
रातरतरमोतीथालमवाडतडोलनारी

३३॥ अथापुसीजनंदकीबीदनाभरत
वधान्यानुग्रामोलिकघोषकीकरवीपर
नकुदान॥ ३४॥ नीतप्रीतवाचजोमनैमन
चीतप्रीतसहेत॥ गांधारजीहिनजोपत
नहीनागदुषदेत॥ इतिश्रीनागकनोम

जानेनागनमकरीकोणपरीसा॥रतनऊ
डावोहरगलचंदनरच्योसीस॥३७॥अथ
मुसीहोरकालीचल्योचरनासीसनवाया
कसरुपहीरदधसोहनेरुपघरजाया॥३८॥
ससासबसुआमिलेनरनारीमावावांद
गुडाई॥सगनपचलेगावकुआया॥३९॥
हाहाहरकसवव्रीजमयोगावमालाचा
रत्नरत्नरमोतीथालमवाडतडोलनारी

३॥ यथा पुसीजनंदकीबीदनाकरत
वयाना॥ नृशमोलिकघोधकीकरवीप
नकुदान॥ ३॥ नीतप्रीतवानजोमुनो॥
चीतप्रीतसहेता॥ गंगाधरजीनीनजीवन
नहीना॥ दुषदेता॥ इति श्रीतामनकोरी
पूर्ण॥

